# 8

# अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, विश्व व्यापार संगठन तथा विशेष आर्थिक क्षेत्र

## [INTERNATIONAL TRADE, WORLD TRADE ORGANIZATION AND SPECIAL ECONOMIC ZONE]

### अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार
### (INTERNATIONAL TRADE)

वस्तुओं एवं सेवाओं के स्वैच्छिक आदान-प्रदान को व्यापार कहा जाता है। व्यापार दो स्तरों पर होता है, जिसे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहा जाता है। देश के भीतरी भागों के मध्य होने वाला व्यापार राष्ट्रीय व्यापार कहलाता है। राष्ट्रीय सीमाओं के आर-पार वस्तुओं एवं सेवाओं का आदान-प्रदान अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहलाता है। अथवा

**'जब वस्तुओं तथा सेवाओं का आदान-प्रदान दो देशों के मध्य होता है, तो उसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहा जाता है।'**

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में विशिष्टीकरण का परिणाम है। यदि विभिन्न देश वस्तुओं के उत्पादन या सेवाओं की उपलब्धता में श्रम विभाजन तथा विशेषीकरण का उपयोग करते हैं, तो अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था को लाभ प्रदान करता है।

इस प्रकार का विशिष्टीकरण अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को जन्म दे सकता है। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार वस्तुओं और सेवाओं के तुलनात्मक लाभ, परिपूरकता व हस्तांतरणीयता के सिद्धांतों पर आधारित होता है। सिद्धांतत: यह व्यापारिक भागीदारी समान रूप से लाभदायक होनी चाहिए।

वर्तमान समय में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार विश्व के आर्थिक संगठनों का आधार बन गया है तथा यह राष्ट्रों की विदेश नीति से सम्बन्धित हो गया है। आज सुविकसित परिवहन एवं संचार प्रणाली से युक्त विश्व का कोई भी देश अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में हिस्सेदारी से मिलने वाले लाभों को छोड़ने का इच्छुक नहीं है। विश्व का प्रत्येक देश अपनी आवश्यकताओं से अधिक उत्पादित वस्तुओं का निर्यात कर विदेशी मुद्रा प्राप्त करता है तथा देश में माँग से कम उपलब्ध वस्तुओं का विदेशों से आयात कर विदेशी मुद्रा का भुगतान करता है। यही कारण ऐसे हैं, जिससे वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का अस्तित्व है तथा प्रतिवर्ष उसकी मात्रा में वृद्धि होती जा रही है।

### अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का महत्व
### (IMPORTANCE OF INTERNATIONAL TRADE)

कोई भी देश अपनी आवश्यकता की वस्तुओं के लिए स्वावलम्बी नहीं होता, अत: उसे अन्य देशों से व्यापार द्वारा अपनी माँगें पूरी करनी पड़ती हैं। किसी देश की आर्थिक स्थिति का ज्ञान उसके व्यापार से ही हो सकता है। यह ठीक ही कहा गया है कि **"अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एक आर्थिक दाबमापक यन्त्र (Barometer) है जिसके द्वारा उस देश के जीवन-स्तर का पता लग सकता है।"** जिन देशों में सघन जनसंख्या हो, वहाँ प्रति व्यक्ति व्यापार का मूल्य उन देशों की तुलना में कम होता है जहाँ जनसंख्या कम होती है, अत: अनेक बार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से सही आर्थिक-स्तर का ज्ञान तो नहीं हो पाता किन्तु यह अवश्य ज्ञात हो जाता है। अमुक देश अन्य देशों की तुलना में कहाँ है?

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार द्वारा किसी देश को अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ उन देशों से प्राप्त हो जाती हैं, जो उनके यहाँ पैदा नहीं होतीं। इसके अतिरिक्त, इन वस्तुओं की उपलब्धि सम्पूर्ण वर्ष ही बिना किसी रुकावट के होती रहती है। उपभोक्ताओं को अपनी पसन्द की वस्तुएँ चयन करने की सुविधा मिलती है। उदाहरण के लिए,

फ्रांस अपनी फैशन एवं सौन्दर्य प्रसाधन की वस्तुओं के उत्पादन में, इटली टाइपराइटर में, भारत तैयार पोशाकों के लिए विश्व में प्रसिद्ध हैं। विशिष्टीकरण के कारण विभिन्न व्यक्तियों/देशों के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ उचित मूल्य पर मिल जाती हैं। भारत से अफ्रीकी देशों को मशीनी औजार, सिलाई मशीनें, कृषि यन्त्र तथा जर्मनी को डीजल पम्प भेजे जाते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार द्वारा सूचनाओं का विस्तार होता है, इससे विभिन्न देशों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध बढ़ते हैं। इसी के द्वारा किसी देश का आर्थिक और व्यापारिक विकास होता है। फलतः वहाँ के निवासियों का जीवन-स्तर ऊँचा उठता है।

## अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभ
## (BENIFITS OF INTERNATIONAL TRADE)

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभ निम्नलिखित हैं–

1. विदेशी मुद्रा का अर्जन,
2. संसाधनों का अधिक क्षमता से उपयोग,
3. जीवन स्तर में सुधार,
4. विकास की सम्भावनाएँ,
5. रोजगार के अवसरों का सृजन,
6. आन्तरिक बाजार की कठिन प्रतिस्पर्द्धा से बचाव।

## अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के आधार
## (BASIS OF INTERNATIONAL TRADE)

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के आठ प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं–

1. **राष्ट्रीय संसाधनों में भिन्नता** (Difference in National Resources)–इस संदर्भ में अग्रलिखित तीन राष्ट्रीय संसाधनों की भिन्नता उललेखनीय है–

**(क) भौगोलिक संरचना**–भौगोलिक संरचना द्वारा धरातल, कृषि संसाधन तथा पशु संसाधन में मिलने वाली भिन्नताएँ निर्धारित होती हैं। पर्वतीय भाग पर्यटकों को आकर्षित कर अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देते हैं।

**(ख) खनिज संसाधन**–विश्व में मिलने वाले खनिज संसाधनों के असमान वितरण से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन मिलता है। यही नहीं, खनिज संसाधनों की उपलब्धता औद्योगिक विकास का प्रमुख आधार होता है।

**(ग) जलवायु**–किसी देश की जलवायु दशाएँ उस देश में उत्पादित उत्पादों की विविधता को सुनिश्चित करती हैं जिससे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बल मिलता है।

2. **जनसंख्या कारक** (Population Factors)–विश्व के विभिन्न देशों में जनसंख्या का आकार, वितरण तथा उसकी विविधता अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की वस्तुओं के प्रकार तथा मात्रा को प्रभावित करते हैं।

**(क) सांस्कृतिक कारक**–विभिन्न देशों में मिलने वाली अलग-अलग संस्कृतियों में कला तथा हस्तशिल्प के विभिन्न रूप मिलते हैं। विभिन्न देशों के उत्तम कोटि के हस्तशिल्पों के उत्पादों की विश्व में पर्याप्त माँग रहती है।

**(ख) जनसंख्या का आकार**–सघन जनसंख्या घनत्व रखने वाले देशों में आंतरिक व्यापार अधिक तथा बाह्य व्यापार कम होता है। उत्तम जीवन स्तर रखने वाले देशों में आयातित उत्पादों की माँग अधिक होती है, जबकि निम्न जीवन स्तर रखने वाले देशों में आयातित उत्पादों की माँग कम रहती है।

3. **आर्थिक विकास की प्रावस्था** (Stage of Economic Development)–किसी देश की आर्थिक विकास की अवस्था से उस देश के व्यापार की वस्तुओं का प्रकार निर्धारित होता है। कृषि प्रधान देशों में विनिर्माण वस्तुओं के लिए कृषि उत्पादों का विनिमय किया जाता है, जबकि विश्व के औद्योगिक दृष्टि से सम्पन्न राष्ट्र मशीनरी व निर्मित माल का निर्यात करते हैं तथा कच्चे माल तथा खाद्यान्नों का आयात करते हैं।

4. **विदेशी निवेश की सीमा** (Extent of Foreign Investment)–ऐसे विकासशील देश, जिनके पास खनन, भारी अभियांत्रिकी तथा बागवानी कृषि आदि के विकास के लिए पूँजी का अभाव है, उन देशों में विदेशी निदेश व्यापार को बढ़ावा देता है। विश्व के औद्योगिक राष्ट्र विकासशील राष्ट्रों में पूँजी प्रधान उद्योगों की स्थापना करते हैं तथा इसके बदले में वे अपने देश के लिए खाद्य पदार्थों तथा खनिजों का आयात सुनिश्चित करते हैं इसके अतिरिक्त अपने उद्योगों में निर्मित उत्पादों के लिए देश व विदेश में बाजार निर्मित करते हैं।

5. **परिवहन के साधनों की सुविधा** (Facility of Means of Transport)–नाव्य जलमार्गों, शीघ्रगामी रेलमार्गों और सड़कों से उत्पादित वस्तुओं को, बिना समय नष्ट किये निर्यात के लिए बन्दरगाहों तक

पहुँचाया जा सकता है अथवा आयात का वितरण किया जा सकता है। शीत भण्डार के प्रचलन से दूरस्थ देशों को माँस, अण्डे, दूध, मक्खन, फल, सब्जियाँ और मछलियाँ बिना नष्ट हुए भेजी जा सकती हैं, जबकि जहाँ परिवहन के साधनों का अभाव है, वहाँ ये वस्तुएँ स्वत: ही नष्ट हो जाती हैं।

6. **राष्ट्रीय आय** (National Income)—जिन देशों में राष्ट्रीय आय अधिक होती है, वे सामान्यत: अपना जीवन-स्तर ऊँचा बनाये रखने के लिए विदेशों से अधिक व्यापार करते हैं और प्राप्त आय का उपयोग नये उद्योगों के विकास या परिवहन के साधनों को प्राप्त करने में करते हैं। प्राय: उन देशों का विदेशी व्यापार भी बहुत बढ़ा-चढ़ा होता है, जिनकी प्रति व्यक्ति आय अधिक है।

7. **राष्ट्रीय नीतियाँ** (National Policies)—प्रत्येक देश की राष्ट्रीय नीतियाँ भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रभावित करती हैं। मुक्त व्यापार नीति (Free Trade Policy) की अपेक्षा अधिक प्रशुल्क दरें (Tariff Rates) व्यापार को सीमित कर देती हैं। प्रशुल्क या आयात कर उन वस्तुओं पर लगाया जाता है, जो किसी देश में स्थानीय रूप से निर्मित की जा सकें। अत: ऐसी वस्तुओं का आयात प्राय: बन्द-सा हो जाता है। अनेक बार किसी देश में आयात की जाने वाली वस्तुओं की मात्रा (Quota) भी नियन्त्रित की जाती हैं। **संरक्षण** (Protection) के विभिन्न रूपों का प्रभाव निश्चित रूप से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर पड़ता है।

8. **व्यापार समझौते** (Trade Agreements)— विभिन्न देशों के बीच होने वाले व्यापार समझौते भी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर प्रभाव डालते हैं। ये समझौते दो प्रकार के होते हैं—**द्विपक्षीय** (Bilateral) और **बहुपक्षीय** (Multilateral)। जब कोई देश दूसरे देश के साथ वस्तु विशेष के क्रय-विक्रय के लिए समझौता करता है तो ऐसे समझौते द्विपक्षीय कहलाते हैं।

जब एक ही देश के अनेक देशों से वस्तुओं के क्रय- विक्रय के लिए समझौते होते हैं तो उन्हें **बहुपक्षीय** समझौता कहा जाता है। ये समझौते अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों अथवा संघों द्वारा प्रोत्साहित किये जाते हैं।

## अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का बदलता स्वरूप
## (CHANGING NATURE OF INTERNATIONAL TRADE)

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के बदलते प्रारूप में महत्वपूर्ण पक्ष निम्नलिखित तीन हैं—

1. **विश्व व्यापार का परिमाण** (Volume of Trade)—व्यापार में सम्मिलित वस्तुओं तथा सेवाओं का वास्तविक मूल्य परिमाण कहलाता है। इसके अन्तर्गत इस तथ्य का अध्ययन किया जाता है कि पिछले दशकों में व्यापार का परिमाण घटा है अथवा बढ़ा है। सामान्यतया पिछले दशकों में विश्व व्यापार में निरन्तर वृद्धि होती रही है। विश्व व्यापार संगठन (W.T.O.) के आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 1955 से 2022 के दौरान विश्व के कुल आयात-निर्यात का परिमाण निम्न प्रकार रहा—

**विश्व : आयात और निर्यात मूल्य (यू. एस. सौ करोड़ डॉलरों में)**

| वर्ष | निर्यात (कुल व्यापारिक माल) | आयात (कुल व्यापारिक माल) |
|---|---|---|
| 1955 | 95 | 99 |
| 1965 | 190 | 199 |
| 1975 | 877 | 912 |
| 1985 | 1954 | 2015 |
| 1995 | 5162 | 5292 |
| 2005 | 10393 | 10753 |
| 2015 | 15583 | 15628 |
| 2022 | 24905 | 25621 |

**स्रोत** : विश्व व्यापार संगठन अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सांख्यिकी, 2024।

पिछले 3-4 दशकों में विनिर्माण, ईंधन तथा खनन (मुख्य रूप से खनिज तेल) चिकित्सा उपकरण व औषधि तथा रसायनिक उत्पादों का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार बढ़ रहा है।

2. **विश्व व्यापार का संयोजन**—इसके अन्तर्गत वस्तुओं एवं सेवाओं के आदान-प्रदान का अध्ययन किया जाता है अर्थात् किस वर्ष में कितनी वस्तुओं का व्यापार हुआ तथा कितनी सेवाओं का। इनके संयोजन में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में प्राथमिक उत्पादनों, कच्चे पदार्थों, मसालों, अनाजों का व्यापार प्रधान था, किन्तु द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विनिर्मित वस्तुओं ने प्रमुखता प्राप्त कर ली। वर्तमान समय में यद्यपि विनिर्मित वस्तुओं के व्यापार की ही प्रमुखता है, परन्तु सेवाओं के व्यापार में तेजी से वृद्धि हुई है।

विश्व व्यापार में विभिन्न वस्तुओं का संयोजन भी भिन्न रहा है। विश्व व्यापार संगठन की 2022 की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व व्यापार संगठन के अनुसार सन् 2022 में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मूल्य की दृष्टि से चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, नीदरलैण्ड, जापान, ब्रिटेन तथा फ्रांस विश्व के अग्रणी देश रहे। कुछ दशकों के दौरान विश्व के कुल व्यापार में यूरोप की भागीदारी घट रही है जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका तथा एशियाई देशों का योगदान बढ़ रहा है।

दूसरी ओर सेवाएँ भारहीन होती हैं, उनका अपरिमित विस्तार किया जा सकता है तथा एक बार सेवाओं का उत्पादन करने पर इनको आसानी से परिवर्तित किया जा सकता है। वस्तुतः सेवाएँ वस्तुओं के उत्पादन की तुलना में अधिक लाभ प्रदान करने की क्षमता रखती हैं।

3. **व्यापार की दिशा**—18वीं शताब्दी तक विनिर्मित व मूल्यवान वस्तुओं को विश्व के वर्तमान विकासशील राष्ट्र यूरोपियन देशों को निर्यात करते थे। 19वीं शताब्दी में यूरोपियन देशों ने अपने उपनिवेशों से खाद्य पदार्थों तथा कच्चे माल का आयात किया तथा बदले में यूरोपियन देशों ने विनिर्मित वस्तुओं को अपने उपनिवेशों में निर्यात किया। यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा जापान विश्व के महत्त्वपूर्ण व्यापारिक साझेदार के रूप में सामने आये।

बीसवीं शताब्दी में यूरोप के उपनिवेश समाप्त हो गये तथा 21वीं शताब्दी में भारत, चीन और अन्य विकासशील राष्ट्रों की अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में साझेदारी बढ़ी तथा इन राष्ट्रों की विश्व के विकसित राष्ट्रों से प्रतिस्पर्द्धा होने लगी। यही नहीं, पिछले दशकों में विश्व की व्यापारिक वस्तुओं की प्रकृति में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं।

**विश्व के कुल निर्यात मूल्य में प्रमुख देशों की भागीदारी** (Share of a Important Countries of the World in Total Export Value)

सन् 2022 में विश्व के विभिन्न देशों द्वारा लगभग 24,905 बिलियन यू.एस. डॉलर मूल्य की वस्तुओं का निर्यात किया गया। सन् 2022 में विश्व के कुल निर्यात मूल्य में सर्वाधिक प्रतिशत रखने वाले देशों में चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, नीदरलैण्ड, जापान, दक्षिणी कोरिया, इटली, बेल्जियम, फ्रांस तथा हांगकांग सम्मिलित रहे।

**विश्व के सर्वप्रमुख निर्यातक देश- मूल्य तथा प्रतिशत योगदान**
**सन् 2022**

| निर्यातक देश | कुल निर्यात मूल्य (यू.एस. बिलियन डॉलर में) | विश्व का प्रतिशत योगदान |
|---|---|---|
| 1. चीन | 3594 | 14.4 |
| 2. संयुक्त राज्य अमेरिका | 2065 | 8.3 |
| 3. जर्मनी | 1655 | 6.6 |
| 4. नीदरलैण्ड | 966 | 3.9 |
| 5. जापान | 747 | 3.0 |
| 6. दक्षिणी कोरिया | 684 | 2.7 |
| 7. इटली | 657 | 2.6 |
| 8. बेल्जियम | 633 | 2.5 |
| 9. फ्रांस | 618 | 2.5 |
| 10. हांगकांग | 610 | 2.4 |
| **विश्व** | 24905 | — |

**स्रोत** : World Trade Statistical Rview, 2023.

सन् 2022 में संयुक्त अरब अमीरात (2.4%), कनाडा (2.4%), मेक्सिको (2.3%), रूसी संघ (2.1%), ब्रिटेन (2.1%), सिंगापुर (1.9%) तथा भारत (1.8%) विश्व के अन्य प्रमुख निर्यातक देशों में सम्मिलित रहे।

**विश्व के कुल आयात मूल्य में प्रमुख देशों की भागीदारी** (Share of a Important Countries of the World in total Import Value)

सन् 2022 में विश्व के सभी देशों द्वारा कुल 25,621 बिलियन यू.एस. डॉलर मूल्य की वस्तुओं का आयात किया। जिसमें विभिन्न देशों की भागीदारी निम्नलिखित तालिकानुसार रही—

**तालिका—विश्व के सर्वप्रमुख आयातक देश- मूल्य तथा प्रतिशत योगदान**
**सन् 2022**

| निर्यातक देश | कुल निर्यात मूल्य (यू.एस. बिलियन डॉलर में) | विश्व का प्रतिशत योगदान |
|---|---|---|
| 1. संयुक्त राज्य अमेरिका | 3376 | 13.2 |
| 2. चीन | 2716 | 10.6 |
| 3. जर्मनी | 1571 | 6.1 |
| 4. नीदरलैण्ड | 899 | 3.5 |
| 5. जापान | 897 | 3.5 |
| 6. ब्रिटेन | 824 | 3.2 |
| 7. फ्रांस | 818 | 3.2 |
| 8. दक्षिणी कोरिया | 731 | 2.9 |
| 9. भारत | 723 | 2.8 |
| 10. इटली | 681 | 2.7 |
| **विश्व** | 25621 | — |

**स्रोत** : World Trade Statistical Rview, 2023.

हांगकांग (चीन) (2.6%), मेक्सिको (2.4%), बेल्जियम (2.4%), कनाडा (1.9%), स्पेन (1.9%) तथा सिंगापुर (1.9%) विश्व के अन्य महत्वपूर्ण आयातक देश रहे।

**विश्व की प्रमुख निर्यातक वस्तुएँ**

सन् 2022 में विश्व के कुल निर्यात मूल्य में विभिन्न वस्तुओं/उत्पादों की भागीदारी निम्नवत् रही—

| वस्तुएँ/उत्पाद | निर्यात मूल्य (यू.एस. बिलियन डॉलर) | कुल निर्यात मूल्य में भागीदारी |
|---|---|---|
| 1. विनिर्माण वस्तुएँ | 15288 | 63.0 प्रतिशत |
| 2. ईंधन तथा खनन उत्पाद | 5158 | 21.0 प्रतिशत |
| 3. कृषि उत्पाद | 2326 | 10.0 प्रतिशत |
| 4. अन्य वस्तुएँ | 1541 | 6.0 प्रतिशत |

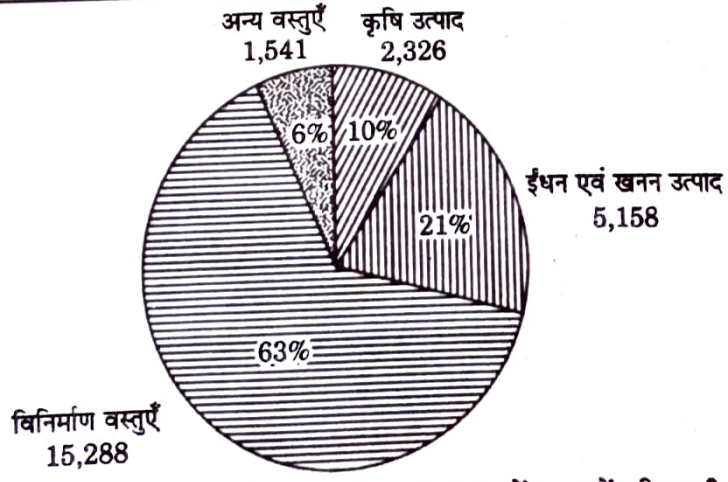


**चित्र 8.1 : विश्व के निर्यात मूल्य में प्रमुख वस्तुओं/उत्पादों की भागीदारी**

# विश्व व्यापार का संतुलन
## (BALANCE OF WORLD TRADE)

प्रत्येक देश कम या अधिक मात्रा में वस्तुओं का आयात-निर्यात करता है। वस्तुओं के आयात-निर्यात का अन्तर व्यापार सन्तुलन कहलाता है। यदि किसी देश में निर्यात की जाने वाली वस्तुओं का मूल्य आयात की जाने वाली वस्तुओं के मूल्य से अधिक है तो वह **अनुकूल व्यापार सन्तुलन** कहलाता है, जबकि निर्यात की जाने वाली वस्तुओं की कीमत आयात की जाने वाली वस्तुओं के मूल्य से कम है, तो **प्रतिकूल व्यापार सन्तुलन** या **ऋणात्मक व्यापार सन्तुलन** कहलाता है।

किसी देश की अर्थव्यवस्था के लिए व्यापार संतुलन एवं भुगतान संतुलन (Balance of Payment) अति महत्वपूर्ण माने जाते हैं। एक ऋणात्मक व्यापार संतुलन का आशय है, कि सम्बन्धित देश अपने यहाँ से विक्रय की गई वस्तुओं के मूल्य से अपने यहाँ क्रय की गई वस्तुओं के मूल्य पर अधिक व्यय करता है। इसका प्रभाव यह होता है कि देश के वित्तीय संचय (Financial Reserves) धीरे-धीरे समाप्त होते चले जाते हैं।

**अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रकार** (Types of International Trade)

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के निम्नलिखित दो वर्ग हैं—

1. **द्विपार्श्विक व्यापार** (Bilateral Trade)—दो देशों के द्वारा एक- दूसरे के साथ किया जाने वाला व्यापार द्विपार्श्विक व्यापार कहलाता है। इस व्यापार के अन्तर्गत एक देश कुछ कच्चे पदार्थों के व्यापार के लिए इस समझौते के साथ सहमत हो सकता है कि दूसरा देश कुछ अन्य निर्दिष्ट सामग्री खरीदेगा अथवा स्थिति इसके विपरीत भी हो सकती है।

2. **बहु पार्श्विक व्यापार** (Multilateral Trade)—बहु पार्श्विक व्यापार में एक देश बहुत-से व्यापारिक देशों के साथ व्यापार करता है। एक देश कुछ व्यापारिक साझेदारों को '**सर्वाधिक अनुकूल राष्ट्र**' (Most Favoured Nation) का दर्जा प्रदान कर सकता है।

**व्यापार उदारीकरण** (Trade Liberalisation)

व्यापार हेतु अर्थव्यवस्थाओं को खोलने का कार्य मुक्त व्यापार (Free Trade) अथवा व्यापार उदारीकरण के नाम से जाना जाता है। (i) यह कार्य व्यापारिक अवरोधों जैसे सीमा शुल्क (Tarrif) आदि को हटाकर किया जाता है। (ii) घरेलू उत्पादों एवं सेवाओं से प्रतियोगिता करने के लिए व्यापार उदारीकरण समस्त स्थानों से वस्तुओं और सेवाओं के लिए अनुमति प्रदान करता है। (iii) इससे बाजारों में विकल्पों की उपलब्धता मिलती है।

व्यापार उदारीकरण से जहाँ एक ओर उक्त लाभ हैं, वहीं दूसरी ओर इससे निम्नलिखित समस्याओं का भी सामना करना पड़ रहा है—

(i) मुक्त व्यापार तथा भूमण्डलीकरण विश्व के विकासशील देशों की अर्थव्यवस्थाओं को उन पर थोपते हैं, जिससे उन देशों को विकास का समान अवसर प्राप्त नहीं हो पाता तथा इन देशों की अर्थव्यवस्था पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। विकासशील राष्ट्रों में परिवहन तथा संचार के अधिक विकसित न होने से वस्तुओं तथा सेवाओं को दूरस्थ क्षेत्रों तक शीघ्र नहीं पहुँचाया जा सकता।

(ii) मुक्त व्यापार के चलते कुछ व्यापारी देश जब सस्ते मूल्य की वस्तुओं को अपने देश में डंप कर लेते हैं जिसके कारण घरेलू उत्पादकों को भारी आर्थिक हानि का सामना करना पड़ता है। इसी कारण डंपिंग (Dumping) व्यापारी देशों के लिए एक गहरी चिन्ता का विषय बनती जा रही है।